क्रिप्स मिशन, जिसे औपचारिक रूप से "सर स्टैफ़ोर्ड क्रिप्स का मिशन" के रूप में जाना जाता है, द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान मार्च 1942 में ब्रिटिश सरकार द्वारा भारत को भेजी गई एक राजनयिक पहल थी। मिशन का नेतृत्व एक वरिष्ठ ब्रिटिश राजनेता और विंस्टन चर्चिल के युद्ध मंत्रिमंडल के सदस्य सर स्टैफ़ोर्ड क्रिप्स ने किया था। क्रिप्स मिशन का प्राथमिक उद्देश्य युद्ध प्रयासों में भारतीय सहयोग को सुरक्षित करना और युद्धोपरांत संवैधानिक सुधारों के प्रस्ताव की रूपरेखा तैयार करना था। क्रिप्स मिशन की प्रमुख विशेषताएं और परिणाम इस प्रकार हैं:

पृष्ठभूमि:

1. द्वितीय विश्व युद्ध: द्वितीय विश्व युद्ध के फैलने से एक वैश्विक संकट पैदा हो गया था, और ब्रिटिश सरकार ने धुरी शक्तियों के खिलाफ युद्ध के प्रयास में भारत सहित अपने उपनिवेशों और प्रभुत्वों का समर्थन मांगा।
2. भारतीय मांगें: महात्मा गांधी और जवाहरलाल नेहरू जैसे नेताओं के नेतृत्व में भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस, भारत के लिए तत्काल स्व-शासन और पूर्ण स्वतंत्रता की मांग कर रही थी। भारत छोड़ो आंदोलन, जिसने ब्रिटिश शासन को समाप्त करने का आह्वान किया, ने इन मांगों को तीव्र कर दिया था।

प्रमुख विशेषताऐं:

1. उद्देश्य: क्रिप्स मिशन का प्राथमिक उद्देश्य युद्ध के प्रयासों में भारतीय सहयोग प्राप्त करना और युद्ध के बाद के भारत के लिए एक राजनीतिक ढांचे पर सुरक्षित समझौता करना था।
2. प्रस्ताव: मिशन के प्रस्तावों को "क्रिप्स प्रस्ताव" या "क्रिप्स प्रस्ताव" नामक दस्तावेज़ में रेखांकित किया गया था। प्रस्तावों के प्रमुख तत्वों में शामिल हैं:
    - युद्ध के बाद ब्रिटिश राष्ट्रमंडल से अलग होने के अधिकार के साथ भारत के लिए डोमिनियन दर्जे की पेशकश।
    - सभी प्रमुख राजनीतिक दलों और समुदायों के प्रतिनिधित्व के साथ एक नए भारतीय संविधान का मसौदा तैयार करने के लिए एक संविधान सभा की स्थापना।
    - भारत में धार्मिक और जातीय अल्पसंख्यकों के अधिकारों की रक्षा करने की प्रतिबद्धता।
    - प्रांतों को उनकी सहमति के अधीन नए भारतीय संघ में शामिल होने का प्रावधान।
    - मित्र देशों के युद्ध प्रयासों के लिए सभी आवश्यक सहायता प्रदान करने की प्रतिज्ञा।

परिणाम:

1. कांग्रेस द्वारा अस्वीकृति: क्रिप्स प्रस्तावों को भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस द्वारा निराशा का सामना करना पड़ा। जबकि डोमिनियन दर्जे की पेशकश को स्वीकार कर लिया गया था, इन प्रस्तावों को कांग्रेस की तत्काल और बिना शर्त स्वतंत्रता की मांग से कमतर माना गया। कांग्रेस ने मिशन के प्रस्तावों को अस्वीकार कर दिया।
2. कोई आम सहमति नहीं: क्रिप्स मिशन भारत के प्रमुख राजनीतिक दलों के बीच आम सहमति बनाने में सफल नहीं हुआ। जबकि कुछ समूह प्रस्तावों को स्वीकार करने के इच्छुक थे, कांग्रेस के समर्थन की अनुपस्थिति और भारत के जटिल राजनीतिक परिदृश्य ने मिशन की सफलता में बाधा उत्पन्न की।
3. भारत छोड़ो आंदोलन की निरंतरता: क्रिप्स मिशन की विफलता ने भारत छोड़ो आंदोलन को और तेज़ कर दिया, जिससे बड़े पैमाने पर विरोध प्रदर्शन और सविनय अवज्ञा हुई और परिणामस्वरूप महात्मा गांधी सहित कई भारतीय नेताओं की गिरफ्तारी हुई।
4. दीर्घकालिक प्रभाव: क्रिप्स मिशन, हालांकि उस समय असफल रहा, फिर भी भारत के राजनीतिक भविष्य पर चर्चा हुई और अंततः भारतीय स्वतंत्रता को साकार करने में योगदान दिया। मिशन के प्रस्तावों ने भविष्य की संवैधानिक चर्चाओं का आधार बनाया और युद्ध के बाद के संवैधानिक विकास के लिए आधार तैयार किया।

क्रिप्स मिशन को भारत के स्वतंत्रता संग्राम में एक महत्वपूर्ण अध्याय के रूप में याद किया जाता है। हालाँकि इससे तत्काल कोई सफलता नहीं मिली, लेकिन इसने स्व-शासन के लिए भारत की आकांक्षाओं को साकार करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठाया, जो अंततः 1947 में स्वतंत्रता प्रदान करने के साथ हासिल किया गया।